Impact Factor 2. 147

ISSN 2349-638x

Reviewed International Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-III | ISSUE-III | Mar. | 2016

Address
- Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
- Tq. Latur, Dis. Latur 413512
- (+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
- aiirjpramod@gmail.com

Website
- www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

राजस्थानी विशिष्ट त्यौहार - गणगौर और तीज

प्रा.डॉ.लीला कर्वा
दयानंद कला महाविद्यालय, लातूर

गणगौर :

राजस्थान के त्यौहारों में गणगौर और तीज विशेष त्यौहार हैं, जो केवल राजस्थान में या राजस्थानी परिवारों में ही मनाये जाते हैं । वसंत के आरम्भ में गणगौर का त्यौहार विशेष धुमधाम और उत्सवता के साथ मनाया जाता है । गणगौर पूजन का प्रारम्भ होली के दहन के दूसरे ही दिन से यानी चैत्रारम्भ होते ही हो जाता है । यह उत्सव सोलह दिन तक चलता है । गणगौर का मुख्य पर्व चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया को मनाया जाता है ।

गणगौर कुमारियों और सुहागनों का पर्व है । कुमारियाँ गौरी-शंकर से सुन्दर और योग्य वर की तथा सुहागन स्त्रियाँ सुहाग की मंगल कामना के लिए देवताओं में शंकर भगवान की पूजा की जाती है । शंकर पार्वती का प्रेम अटूट अखंड है । शंकर जी के जीवन में पार्वती के अलावा और कोई दूसरी नारी आयी ही नही । शिव-पार्वती दाम्पत्य प्रेम के आदर्श माने गये हैं । इसीलिए गणगौर पर शिव पार्वती (ईसर-गौरी) के पूजा का विधान है।

इस पूजा की जड़े लोक परम्परा में ही नहीं, हमारे प्राचीन शास्त्र ग्रन्थों में भी है, जैसा कि निर्णय सिन्धु में उल्लेख है -

चैत्र शुक्ला तृतीयायां, गौरीमी श्वर संयुताम्
सम्पूज्य दोलोत्सवं कुर्यात । ।

चैत्र प्रतिपदा को गणगौर की स्थापना करते हैं । इस दिन होली की राख के १६ पिंडया (मुटके) बनाते हैं । दीवार पर १६ कुंकुम की टिकी लगाते हैं । इस दिन गेहूँ की (ओंब्या) से ही गौरी पूजन करते हैं ।

यह पूजा सोलह दिन तक चलती है । पूजा के लिए हरि दुब पुष्प तथा जल से भरे कलश से मंगल गीत गाती हुई अपनी सहेलियों के साथ पूजा करते हैं । साधारण घरों में शीतला सप्तमी के दिन गणगौर मांडते (शिव-पार्वती के चित्र दीवार पर बनाते) हैं । तथा चैत्र शुक्ला तीज को उसका गीत गान एवं मिष्टान्न के साथ पूजन करते है । सप्तमी के दिन शीतला माता की पूजा कर जँवारे बोये जाते हैं । सप्तमी से तीज (गणगौर) तक रोज जँवारों को सिंचकर गीत गाते हैं और कहीं कहीं घुडला खेलते हैं ।

इन गीतों में जँवारा के गीत के साथ-साथ गणगौर, टिका, चुंदड, मेहंदी, हिंडाळी, बिजणा आदि गीत प्रसिद्ध हैं । गणगौर के अवसरस पर लेर घुमेर नृत्य और नौका विहार की विशेषतः होती है । नवविवाहित पुरुष अपनी ससुराल जाकर इन रागरंगों का आनंद उठाते हैं । गणगौर की प्रतिमाओं को सजाकर नगर के लोग गणगौर की सवारी निकालते हैं । जिसमें गाँव की महिला और लड़कियाँ सजधज कर सम्मिलित होती हैं । यह सँवारियाँ कहीं कहीं ४ दिन निकलती हैं । तो कहीं गणगौर के पहले दिन दूज को निकलती हैं ।

सिंजारा -

गणगौर यानि चैत्र शुक्ला तृतीया के एक दिन पहले चैत्र शुक्ल द्वितीया को सिंजारा होता है । उस दिन नववधुओं तथा बहन बेटियों के लिए सुन्दर साडी घागरे मिष्टान्न उपहारस्वरुप में भेजते हैं ।

गौरी (पार्वती) को बेटी के स्वरुप मानकर गौर पर शादी के गीत भी (झाला-वारणा) गाते हैं । गण गौर पूजन के समय गौर माता से प्रार्थना करते हैं -

गौर ए गणगौर माता खोल किवाडी
बायर उभी थाने पूजनवाळी
पूजो ए पूजाऱ्यां बाया, कांई कांई मांगो
मांगा म्हे तो अनधन लाछर लिछमी
कान्ह कूँवर सो बीरो मांगा राई सी भोजाई
जळभर जामी बाबल मांगा, राता देई मायड
बडो दुमालिक काको मांगा चुडला वाली काकी
फूस उडावण फूफो मांगा कूडो धोवण भूवा
काजल्यो बहनोई मांगा सदा सुहागन बहना
इतरो तो देई माता गौरज ए, इतरो सो पिरवार ए
देई तो पियर सासरौ ए सात भायांरी जोड ए
परण्यां तो देई माता पातळा ए सारं मे सिरदार ए

ऐ गौर माता तुम अपना द्वार खोलो । बाहर तुम्हे पूजनेवाली खड़ी है । गौर माता उन्हें वर मांगने कहती हैं । तो यह राजस्थानी ललना अपने पूरे परिवार का सुख मांगती है । राजस्थान में पारिवारिक संघटन की मजबूती के पीछे यही संस्कार महत्वपूर्ण है । आज भी राजस्थानी परिवार जहाँ जाते हैं वे एकत्रित रहते हैं । यहाँ इस गीत में केवली पिहर के ही लोगों का सुख मांगा नहीं तो ससुराल में भी सात भाईयों की जोड हो ऐसी कामना वो गौर माता से पहले करती है और बाद मे परण्या (पती) सब में सिरदार हो ऐसी कामना करती है ।

यहाँ और एक गीत में गणगौर की आरती करते हुए सभी की जोडी स्वस्थ (अखंड) रखो ऐसी प्रार्थना करती है -

रामा पेली आरती राई रिमरोळ राई रिमरोळ
बाप बेटारी इबछळ जोड, ले गौरल आसो
सोळा दिनारो बासो, सॉवळडीरो बडो तमाशो
मैं फुल बखेरुँ रळीया म्हारा बाजीरी गळीया
रामा दुजी आरती राई रिम रोळ राई रिम रोळ
काका भतीजारी इबछळ जोड ले गौरल आसो
सोळा दिनारो बासो साँवळडीरो बडो तमाशो

इसी तरह तीजी आरती .... चौथी आरती - मैं भाई-भाई साला बहनोई, ननंद भोजाई, सास बहु की जोडी अखंड रहे । उनमें कभी मतभेद न होवे ऐसी प्रार्थना करती है ।

गणगौर पूजने से हमें सरबसता (संपन्नता) जरुर मिलेगी ऐसा विश्वास उसे है - इस समय बोये हुए जँवारे अगर अच्छे उगते हैं तो अच्छे सगुण का लक्षण माना जाता है ।

पुजूनी गिणगौर सहेली म्हे तो पुजूनी गिणगौर
ओजी म्हाणे देवेली देवेली सरबरता ।।
सहेली म्हेतो पुजूनी गिणगौर
उग्या जँवारा म्हारा हरिया हरियाजी
सुगन किया रे गिण गौर
ओजी म्हारी होवेली मनसा पुरी ।।

गौरी के विवाह की (पार्वती) जान आती है, तब माँ सब जानियों का (बारातियों) वर्णन सुनती हैं । साथ ही महादेवजी का वर्णन सुनती है, उनका विद्रुप देखकर तो वो बेहोश हो जाती है । तब पार्वती उन्हें रुप बदलने को कहती है । बाद में महादेवजी के रुप को देखकर माँ खुश होती है ।

भर गुडासा बाज्या ये माय । जान आई ये म्हारी गोर की
उची चढ देखुँ ये माय । बींद कीस्यो ये म्हारी गोर को
सब जान्यार घुडला ये माय, महादेव नांदयो पीला नीयो
सब जान्यार जामा ये माय महादेव व्याघाम्बर पेरीया
सब जान्यार कंठी ये माय, महादेव सर्प पळेटीया
सब जान्यार मुरख्या ये माय महादेव कुंडल पेरीया
सब जान्यार पेचा ये माय महादेव जटा बिखेरीया
म तो मरु ऐक जीवूं ये माय बींद बरोजी म्हारा गोर को
थे तो रुप धरोजी महादेव जीव दोरोजी म्हारा मायको
भर गुडासा बाज्या ये माय जान आई ये म्हारी गोरकी
ऊँची चढ देखुँ ये माय बींद किस्यो ये म्हारी गोर को
सब जान्यार पेचा ये माय महादेव तुररा टाकीया
सब जान्यार जामा ये माय महादेव बागा पेरीया
सब जान्यार डोरा ये माय महादेव कंठो पेरीया
सब जान्यार कुंडल ये माय महादेव लुंग पेरीया
सब जान्यार घुडला ये माय, महादेव रथडो जोतीया
थे तो रुप धऱ्योजी महादेव, जीव सोरोजी म्हारी माय को

अपने बेटी का वर सुंदर हो इसकी सबसे अधिक चिंता माँ को ही रहती है। गणगौर में नृत्य, घुमर, नौका विहार करते हैं । गणगौर खेलने के लिए नायक अपने नायिका को मनाता है । तुम श्रृंगार कर खेलने चलो पर नायिका अपने नायक के सामने कुछ शर्ते रखती है ।

माथा ने मेमंद पेरो गणगौर काना ने कुंडल पेरो गणगौर
देखी थारी रखडी री अजब मरोड
छेलो दुपटो द्योतो दुपट्टा रो झालो द्यो तो
नेनारा निजारा द्यो तो पूजा गणगौर ओ म्हे खेला गणगौर
मुखडा न बेसर पेरा गणगौर हिवडा ने हांसज पेरो गणगौर
देखी थारा झुठणारी अजब मरोड
पीळी पीळी मोहरा द्यो तो धोळा धोळा रुपियाँ द्यो तो

छाने छाने लाडु द्यो तो पूजा गणगौर जी म्हे खेला गणगौर ।
बैयां ने चुडलो पैरो गणगौर बैया ने गजरा पेरो गणगोर
देखी थारी बाजुबन्दरी अजब मरोड
झरोखा सु झालो द्यो तो दोय मग सामा द्यो तो
गोरी न गोदी में लेओ तो पूजा गणगौर जी म्हे खेला गणगौर

एक ओर नायक नायिका को गणगौर खेलने मनाता है परंतु दूसरी ओर जब नायिका पिहर गणगोर के लिए जाना चाहती है तो नायक उसे रोकता है । यहाँ रुठी हुई नायिका भी बाबासा के यहाँ गणगौर खेलने के लिए आतुर है वो नायक को विनंती करती है मुझे जाने दो - पर नायक कहता है तुम बिन मुझे एक पल भी अच्छा नहीं लगता ।

म्हारा बाबासार मांडी गिणगौर ओ रसिया
घडी दोय रमबा जाबा द्यो
थान घडी दोय जावता पलक दोय आवता
सारो दिन सहेल्याम लागए मरवन
था बीन घडीयन आवड
थाकी नथ चिलक थाळी टिकी भळक
थोको नेणारो प्यारो लाग ये मिरगा नेणी
था बीन घडीयन आवड
तन बार बार समझावू रे दर्जी म्हारी ये अंगिया रेबा दे
म्हारा छेल भंवर को जामो शिबर ल्याद रे दर्जी पेर सिधाव ढोला गणगोत्या
तन बार बार समझावू रे सोनी म्हारा गजरा रेबादे
म्हारा छेल भँवर कंठो घडल्याद रे सोनी पेर सिधाव ढोला गणगोत्या ।

वो नायिका दर्जीको कहती है मेरे कपडे तुम बाद में सिना । पहले मेरे भँवर (पती) के कपडे सिलवा दो तो वो पहनकर गणगोर को आयेंगे । सोनी (सोनार) से कहती है मेरे बाजुबन्द (गजरा) रहने दो पहले भँवर की कंठी ला दो वो पहन कर गणगौर को आयेंगे ।

गणगौर के कई सुंदर गीत है । इनमें बीजणो अर्थात पंखा का गीत बहुत सुंदर है । गर्मी की शुरुवात हो गयी तब पंखा तो जरुरी है । तो यह पंखा बहन और बहनोई अपने प्यारे साले साहब के लिए बनाते हैं और वो पंखा उसकी पत्नी ढुलाती (हिलाती) है ऐसे भाव हैं । बीजणा कितना सुंदर गुथाया है, इसका वर्णन है ।

बीजणो कठोडारा बासी, बीजणो रंग रातो रे मरवा
बीजणो इंदरगढ रो बासी बीजणो रंग रातो रे मरवा
बीजणो सूरजमलजी गूँथ्यो बीजणो रंग रातो रे मरवा
बीजणो बाई रेणादे खिणायो बीजणो रंग रातो रे मरवा
बीजणो ईसरदासजी री सेजा बीजणो रंग रातो रे मरवा
बीजणो बहु गोरल ढोळे बीजणो रंग रातो रे मरवा
बीजणारे एवडं दांडी छेबड दांडी अस्सी ए कळयां रो
नौसो जाळयां रो बीजणो रंग राऱ्यो रे मरवा
बीजणो दे रंग रंगीलो छाव छबीलो रोब रंगीलो

बीजणो रंग रातो रे मरवा

गणगौर का पूजन कर कथा कही जाती है । यह लोक कथाएँ केवल रोचक और मनोरंजनात्मक ही नहीं होती अपितु इन कथाओं में परंपरा से चली नारी की भावनाओं को हम देख सकते हैं । साथ ही यह कहानियाँ हमें कुछ सिखाती हैं, इनमें बहुत गहरा अर्थ छिपा हुआ मिलता है ।

तीज :

भारत में हर प्रांत में आनंद के साथ मेले और उत्सवों के साथ कुछ धार्मिक पर्व जोडे हुए हैं । राजस्थान में सावन महिना वर्षा के साथ साथ त्यौहार मेला और आनंद की बौछारें लाता है । पानी के लिए तरसता यह प्रदेश सावन के हरियाली से झूम उठता है । मानो प्रकृति के साथ हर राजस्थानी नाचता है गाता है । व्यापार के लिए दूर दूर गए हुए राजस्थानी पुरुष अपने घर तीज पर जरुर पधारते हैं । नायिका अपने नायक का बड़ी बेसब्री से इंतजार करती है ।

आंबाजी बैठी कोयलडजी दोय सवद सुनावेजी
जाय ढोलैजी नै यु कहीजै पैली तीज पधार ।

एक और प्यासी धरती को सावन की झड़ी भिगोती है तो दूसरी ओर घर आए अपने प्रियतम के स्वागत में आनंद आश्रु की झड़ियाँ लग जाती हैं ।

श्रावण शुक्ला तृतीया को छोटी तीज तथा भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की तृतीया को काजलिया तीज या बड़ी तीज मनायी जाती है । गणगौर के समान ही राजस्थान का यह प्रमुख सांस्कृतिक पर्व है । तीज वस्तुतः पार्वती का ही प्रतीकात्मक नाम है । ऐसी मान्यता है कि तीज के ही दिन दीर्घकालीन कठोर तपस्या के पश्चात पार्वती को अपने आराध्य एवं प्रियतम शिव की प्राप्ति हुई थी । तभी से तीज कुमारियों एवं सौभाग्यवती ललनाओं के लिए सौभाग्य के मंगल पर्व के रुप में मनायी जाती है । महाराष्ट्र में हरतालीका का जो व्रत है वही राजस्थानी तीज के रुप में मनाते हैं । भारत में कुछ भागों में मास पूर्णिमान्त (पूर्णिमा से अन्त होनेवाले) होते हैं कुछ भागों में मास अमान्त (अमावस्या से अन्त होनेवाले) होते हैं । इसी कारण महाराष्ट्र और राजस्थान की तिथियाँ त्यौहार में १५ दिन का अंतर पड़ता है । कुमारियाँ इस दिन पार्वती का पूजन कर शिव जैसा योग्य वर पाने की प्रार्थना करती हैं । स्त्रियाँ अपने सुहाग की रक्षा हेतु व्रत रखती हैं ।

रात्री मे नीम की डाल की पूजा करते हैं । मिट्टी की पाळ (बॉध) बनाकर पानी से सिंचते हैं । इसे लिंबडी पूजन कहा जाता है । इस दिन नीम के पेड़ की पूजा न करते हुए डाल की पूजा करना ऐसी कथा है । इसके पीछे यह उद्देश्य है इस छोटे छोटे डाल के अनेक वृक्ष लगाये और उसकी निगरानी करें । क्योंकि आयुर्वेद में नीम के पेड़ के कई गुण बताये हैं । वायुशुध्दि और किटकनाशकता इस पेड़ की विशेषता है । इसी कारण पेड़ की पूजा न करते हुए डाल की पूजा कर उसे लगायें । यह भाव इसकी कथा में हमें दिखता है । पर्यावरण का संदेश हमारा धर्म कितनी सहजता से देता है।

नीम की पूजा के पश्चात रात में पिंडा पासना का कार्यक्रम रहता है । इसमें दाल, गेहूँ, चाँवल को सेंककर उसका आटा बनाया जाता है - उसमें घी और पिसी हुई शक्कर डालकर उसका शिवजी के पिंड के समान आकार बनाया जाता है । इसे पिंडा कहते हैं । रात में पिंड को पास कर (चिरना) उसका सेवन करते हैं । कई लोगों की ऐसी मान्यता है पिंडा पासने (चिरने) की यह प्रथा मुस्लिम आक्रमणों के बाद से आई है । मुलतः पिंडा पासना का अर्थ है पिंड की उपासना करना, शिवजी की उपासना करना है । इसलिए श्रीमन नारायण सम्प्रदाय के लोग पिंडा पासते नहीं।

सेंका हुआ अनाज खाना तो निसर्गानुसार योग्य ही है वर्षा ऋतु में पचन शक्ति कम रहती है । पित्त प्रकृति बढती है । ऐसे ऋतु में सेका हुआ धान पचने में हलका और मीठा खाना पित्तनाशक रहता है ।

इस अवसर पर झूला झूलने और चिरमी खेलने की प्रथा है । सावन के गीत राजस्थानी लोकगीतों का महत्वपूर्ण अंग है ।

तीज का त्यौहार विवाह के पश्चात एक साल पीहर में मनाने की परम्परा है। राजस्थान में एक प्रथा है कि विवाह के बाद के पहले श्रावण में सास और बहु को कभी साथ नहीं रहना चाहिए इसलिए ससुरालवाले अनिष्ट के भय से उसे पीहर भेज देते हैं । मुझे इस प्रथा के पीछे हमारे पूर्वजों की समझदारी लगती है । क्योंकि श्रावण में तीज पर झुला झुलने, चिरमी खेलने, मेले में जाना आदि प्रसंग पर बहु को खुलापन नहीं मिलता । नई नवेली दुल्हन को अपने सहेलियों के साथ खुले वातावरण में इसका आनंद मिले इसलिए यह आवश्यक है ।

इन गीतों में लिंबडी (नीम), नथनी, खुर्ज्या, ननंद भोजाई के साथ ही झूले, चिरमी और वर्षा ऋतु का चित्रण है । इन गीतों में निसर्ग वर्णन के साथ मन के अनेकानेक भावरंग को प्रस्तुत किया है । गीत इस प्रकार है -

ओ काली बादली ओ बरसे रिमझिम धार
ओ घुंघट में मुख मुळकणो, पिनघट री पीनहार ।
सावणीया सुवटीया राज, चोमासारे चढता राज
ए बाजे बायरियो आहा के आयो सावणीयो । । १। ।
ए बारामासी थारी बाता झुठी झुठी लागेजी
झुठी झुठी लागे बाता झुठी झुठी लागे
ऐ बिना चुंदरी लहरियारी सावन फिको लागेजी
सावण फिको लागे ओ तो सावण फिको लागेजी
गिणगोरास प्यारा तितर राज, तेजणीयारा तेजा राज
मेहंदीयारा राचणीया राज के बाजे बाजरीयो । । ३। ।
चेतरी चितभगी नार, कातिरी पूजारन नार
जेठरी जंजाळी नार, मिंगसररी पथवारी नार
के बाजे बायरी यो आहा के आयो सावणीयो । । २। ।
ए गडजन पूरबरी पूरवाई मुदरी मुदरी बाजेजी
ए बाजु बंदरी लुंब थारी झिणी झिणी नाचेजी
झिणी झिणी नाचे आतो झिणी झिणी नाचे
आषाढारा भरिया नाला दादर गाजेजी
पिनघट री पणिहारी नार गायारी गुवालन नार
बाग बागरी मालन नार गली गलीरी जोगन नार
के बाजे बायरीयो आहा के आयो सावणी यो । । ४। ।

चारों ओर काले बादल छाये हैं । रिमझिम रिमझिम वर्षा की बौछारें हो रही हैं। ऐसे समय पानी भरने वाली पनिहारी का मुख घुँघट में चमक रहा है । सावन आया है - इन चार महिने में वर्षा का रंग चढ रहा है

- बादल छाये हैं - ठंड बढ़ रही है । तेजी से बह रहे पवन की मधूर आवाज आ रही है - जिससे सावन का मजा आयेगा ।

चैत्र में चित्तमें रमनेवाली नार, कार्तिक में पूजा में रमनेवाली नार, जेष्ठ में पानी से प्यारी नार, मिंगसर में बाँट जोनेवाली नार, हवा का झोंका सावन का संदेशा ला रहे हैं ।

यह नार (नारी) अपने पिया से कहती है, बारह महिने तुम्हारी बातें बड़ी झुठी लगती हैं । चुंदरी (राजस्थान की बॅधेज की साड़ी) और लहरिया बिना सावन का मजा ही नहीं आता ! ओ प्रियतम ! तुम हँसते हुए बड़े अच्छे लगते हो । ओ मेरे गणगोर के प्यारे राजा, तीज का तेज आपका है, मेरी मेहंदी का रचा हुआ रंग भी आपही है, तो सावन का आनंद हम साथ लें ।

यह प्रियतम भी अपने प्रेमिका से कहता है, मेरे पूर्वजों की महिमा की गूॅंज हो रही है, तेरी बाजुबंद की डोर झिणी झिणी बज रही है । आषाढ में भरे हुए नाले बह रहे हैं । ए पानी भरने जानेवाली नार, गाय का पालन करनेवाली नार, बागबगिचा तयार करनेवाली नार, गली गली में घूमनेवाली प्यारी, पवन बह रहा है - सावन का संदेशा लाया है - सावन आया है ।

ऐसे सुंदर और सजिले वातावरण में पति परदेस है तो वो उसे संदेसा भिजवाती है । इस बार सावन के महिने में हम साथ रहेंगे - गीत इस प्रकार है -

काळी काळी काजळिया री देख
काळी ने कांठळ में चमके बीजळी
बरसो बरसो मेहा जोधांणेरे देस
जठे जामण जाया री चाकरी । । १। ।
ऊभा ऊभा हो राणी छाजलिया री तीज
पैले ओ सावन भेळे रैवस्यां । । २। ।
आडा आडा हो राणी समंद तळाव
आडी नदियाँ हो नीर घणों
आडी ने बाईसा रो सासरो ।। ३।।
लाजो लाजो राजानामी बाई सारे बोरंग चूंदड़ी
म्हारे ओ साळे सिणगार ।।४।।
समंदा समंदा राजानामी जहाज तिराय
नदियां ओ तेरु रा बेटा नै मेल जो
लाया लाया रा राणी सोळे सिणगार
बाई सा रे बोरंग चूंदड़ी ।।५।।

काले काले बादलों में बिजली चमक रही है । मेह तुम भाई जोधाणा (जोधपुर) जाकर बरसो । जहाँ मेरे पति नौकरी के लिए गये हैं ।

छज्जे की छाँह में खड़ी पत्नी पत्र भेज रही है, मेरे राजा सावन की तीज पर यहाँ आ जाना । सावन का महीना हम साथ रहेंगे । ननंद के लिए बहुरंगी चूॅंदड़ी लेते आना। मेरे लिये सोलह श्रृंगार लाना ।

रानी कैसे आऊँ ? मार्ग में बहुत से तालाब हैं, मार्ग रोके नदियाँ बह रही हैं । मार्ग में बहिन का ससुराल है ।

मेरे राजा तालाबों में जहाज डाल देना, नदियों को तैराकों की सहायता से तैर कर पार हो जाना।

रानी, ले आया हूँ तुम्हारे लिए सोलह श्रृंगार और बहन के लिए बहुरंगी चूँदड़ी लाया हूँ ।

संदर्भ ग्रंथः

1) राजस्थान के सांस्कृतिक लोकगीत - लक्ष्मीकुमारी चुन्डावत
2) राजस्थान की गणगौर - महेन्द्र आणावत
3) आपणा गीत आपणी रीत - प्रकाशक - राजस्थानी महिला मंडळ

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com